Aarti Kunj Bihari Ki

आरती कुंजबिहारीकी

REFRAIN · टेक

टे॰ आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

VERSES · आरती

1 गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नंदके आनँद नँदलाला॥ श्रीगिरधर०॥

2 गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

3 कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनकों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

4 जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

5 चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

REFRAIN · टेक (CLOSING)

टे॰-2 आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥

Text checked against: Gita Press, Gorakhpur: Aarti Sangrah (code 153), 'भगवान् कुंजबिहारी' (second of two). Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/aarti-kunj-bihari-ki/